

विगत दशकों में मूर्ति कला के बदलते आयाम

डॉ राजीव शर्मा,

व्याख्याता चित्रकला, राजकीय महाविद्यालय खेरवाड़ा उदयपुर राजस्थान

मूर्ति कला भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग रही है। दशकों के दौरान इस कला में अनेक बदलाव और नवीन आयाम देखे गए हैं, जो सामाजिक, तकनीकी और सांस्कृतिक परिवर्तनों का परिणाम हैं। पारंपरिक मूर्तिकला, जो प्राचीन काल में धार्मिक और पौराणिक कथाओं पर आधारित थी, आज समकालीन विषयों और आधुनिक तकनीकों के साथ एक नया स्वरूप ले रही है। प्रारंभिक मूर्तिकला मुख्यतः पत्थर, कांस्य और मिट्टी से बनाई जाती थी, जिसमें देवताओं, मानव आकृतियों और प्राकृतिक तत्वों का चित्रण प्रमुख था। लेकिन आजकल मूर्ति कला में विभिन्न प्रकार के सामग्रियों जैसे धातु मिश्रधातु, प्लास्टिक, फाइबरग्लास, और पुनर्नवीनीकरण सामग्री का उपयोग बढ़ा है। इससे मूर्तियों की विविधता और टिकाऊपन दोनों बढ़े हैं। तकनीकी प्रगति के कारण मूर्तिकला में डिजिटल डिजाइन और 3D प्रिंटिंग जैसी नई विधियों का समावेश हुआ है, जिससे मूर्तियों की जटिलता और विवरण अधिक सटीकता के साथ उभरे हैं। इसके साथ ही, मूर्ति कला का विषय भी धार्मिक से सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय संदेशों की ओर बढ़ा है। कलाकार अब मूर्तियों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं, मानवाधिकार, और सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित कर रहे हैं।

इसके अलावा, मूर्ति कला में प्रदर्शन की विधि भी बदली है। अब मूर्तियां केवल मंदिरों या सार्वजनिक स्थानों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि गैलरियों, प्रदर्शनियों और डिजिटल माध्यमों पर भी व्यापक रूप से प्रदर्शित की जाती हैं। इस बदलाव ने मूर्ति कला को अधिक समकालीन, वैश्विक और संवादात्मक बनाया है। संक्षेप में, विगत दशकों में मूर्ति कला ने परंपरागत सीमाओं का तोड़ा है और नए तकनीकी, विषयगत और सांस्कृतिक आयामों को अपनाकर स्वयं को निरंतर विकसित किया है। यह बदलाव मूर्ति कला को न केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम बनाते हैं।

शब्द कुंजी : मूर्ति कला, दशकों, बदलाव, आयाम, पारंपरिक, समकालीन, तकनीकी प्रगति, सामग्री, धातु, पत्थर, मिट्टी, प्लास्टिक, फाइबरग्लास, 3D प्रिंटिंग, डिजिटल डिजाइन, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, पर्यावरणीय, मानवाधिकार, सांस्कृतिक विविधता, प्रदर्शन, गैलरी, सार्वजनिक स्थान, संवादात्मक, वैश्विक, विकास, कलात्मक अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक संवाद।

मूर्ति कला का इतिहास भारत की प्राचीन सभ्यताओं से जुड़ा हुआ है, जहाँ यह कला धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक परंपराओं का अभिन्न हिस्सा थी। प्रारंभिक और पारंपरिक मूर्ति कला मुख्यतः धार्मिक और पौराणिक कथाओं पर आधारित थी, जो मंदिरों, पवित्र स्थलों और राजदरबारों में स्थापित की जाती थीं। इन मूर्तियों का उद्देश्य न केवल धार्मिक पूजा और भक्ति भाव का संचार करना था, बल्कि समाज में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी प्रदर्शित करना था। प्रारंभिक मूर्तिकला में मुख्यतः पत्थर, कांस्य, और मिट्टी का उपयोग होता था। उदाहरण स्वरूप, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता में मिट्टी की मूर्तियां पाई गई हैं, जो उस समय की सांस्कृतिक गतिविधियों और धार्मिक विश्वासों को दर्शाती हैं। इसके बाद के युगों में गुप्त और मौर्य काल में कांस्य और पत्थर की मूर्तिकला अपनी चरम सीमा पर पहुंची। इस काल की मूर्तियों में भगवान बुद्ध, शिव, विष्णु, देवी-देवताओं के सूक्ष्म और विस्तृत चित्रण देखे जा सकते हैं।

पारंपरिक मूर्तियों की विशेषता उनकी शिल्प-कौशल में निहित होती थी। कलाकार न केवल आकृतियों को यथार्थ के निकट बनाते थे, बल्कि उनमें आध्यात्मिक और सौंदर्यात्मक भावों को भी जीवंत करते थे। उदाहरण के लिए, खजुराहो, मथुरा और एलोरा की मूर्तियां न केवल धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि कला की दृष्टि से भी अत्यंत उत्कृष्ट हैं। इन मूर्तियों में मानव शरीर की नक्काशी, मुद्रा, हाव-भाव, और परिधान के सूक्ष्म विवरण देखने को मिलते हैं। इस प्रकार, प्रारंभिक और पारंपरिक मूर्ति कला ने भारतीय कला जगत की नींव रखी और धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक मान्यताओं का सशक्त प्रतिनिधित्व किया। ये मूर्तियां कालांतर में भी एक मिसाल बनीं, जिनसे आधुनिक मूर्ति कला ने अपने विकास के लिए प्रेरणा ली।

सामग्री और तकनीकों में बदलाव – विगत दशकों में मूर्ति कला में सबसे स्पष्ट और महत्वपूर्ण बदलाव सामग्री और तकनीकों के क्षेत्र में देखे गए हैं। पारंपरिक रूप से, मूर्तिकला में पत्थर, कांस्य, तांबा, और मिट्टी जैसी प्राकृतिक सामग्री का उपयोग प्रमुख था। कलाकार इन सामग्रियों के माध्यम से धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कथाओं को जीवंत करते थे। लेकिन समय के साथ-साथ नई तकनीकों और सामग्रियों के प्रयोग ने मूर्ति कला को एक नया स्वरूप और अधिक विविधता प्रदान की है। सबसे पहले, पारंपरिक सामग्रियों के साथ-साथ अब प्लास्टिक, फाइबरग्लास, मिश्रधातु, राल (रेजिन) और पुनर्नवीनीकरण सामग्रियों का उपयोग बढ़ा है। ये सामग्रियां न केवल हल्की और टिकाऊ होती हैं, बल्कि इनसे मूर्तियों को जटिल और सूक्ष्म आकार देना भी आसान हो गया है। फाइबरग्लास और राल जैसी सामग्रियों के कारण मूर्तियों का वजन कम हुआ है, जिससे उन्हें सार्वजनिक स्थलों, प्रदर्शनियों और सजावट के लिए आसानी से ले जाया और स्थापित किया जा सकता है।



तकनीकी प्रगति ने भी मूर्ति कला को गहराई से प्रभावित किया है। डिजिटल डिजाइनिंग, कंप्यूटर एडेड डिजाइन और 3D प्रिंटिंग जैसी तकनीकों के आने से मूर्तियों की जटिलता, परिशुद्धता और विस्तार में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। कलाकार अब इन तकनीकों की मदद से ऐसी मूर्तियां बना पा रहे हैं, जो पारंपरिक तरीकों से संभव नहीं थीं। 3D प्रिंटिंग के माध्यम से मूर्तियों के निर्माण में समय और श्रम दोनों की बचत होती है, साथ ही यह कलाकारों को नए प्रयोग और नवाचार के लिए भी प्रेरित करता है। इसके अतिरिक्त, मिश्रधातुओं के प्रयोग से मूर्तियों की स्थिरता और टिकाऊपन बढ़ा है। कांस्य और तांबे के पारंपरिक मिश्रणों के साथ अब अन्य धातुओं को भी मिलाकर हल्की और मजबूत मूर्तियां बनाई जा रही हैं, जो लंबे समय तक खराब नहीं होतीं। इस प्रकार, सामग्री की विविधता ने मूर्ति कला को अधिक व्यावहारिक और टिकाऊ बनाया है। संक्षेप में, सामग्री और तकनीकों में आए इन बदलावों ने मूर्ति कला को परंपरागत सीमाओं से ऊपर उठाकर एक नई दिशा दी है। इन नवाचारों ने कलाकारों को अपनी कला में नए आयाम जोड़ने का अवसर दिया है और मूर्ति कला को समकालीन दुनिया के अनुरूप और अधिक सजीव तथा प्रभावशाली बनाया है।

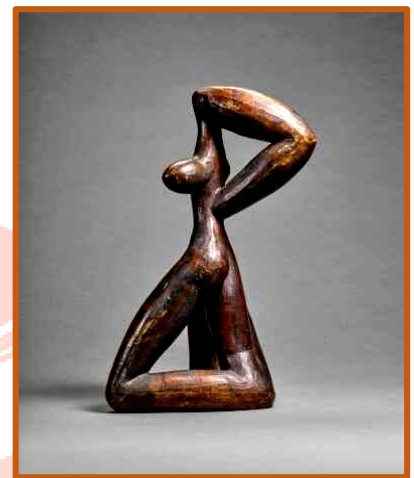


मूर्ति कला में विषयगत विविधता – विगत दशकों में मूर्ति कला के विषयों में उल्लेखनीय विविधता और विस्तार आया है। परंपरागत रूप से, मूर्तिकला मुख्यतः धार्मिक और पौराणिक कथाओं पर आधारित थी, जिसमें देवी-देवताओं, महापुरुषों, और धार्मिक प्रतीकों का चित्रण प्रमुख होता था। मंदिरों, धार्मिक स्थलों और राजदरबारी आयोजनों के लिए बनाई गई मूर्तियां धार्मिक श्रद्धा और भक्ति भाव का प्रतीक थीं। लेकिन आधुनिक समय में मूर्ति कला ने धार्मिक सीमाओं से परे जाकर सामाजिक, राजनीतिक, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक विषयों को भी समाहित किया है।

समाज में बदलाव, वैश्वीकरण, और सामाजिक चेतना के विकास ने

मूर्तिकारों को नए विषयों की ओर प्रेरित किया है। अब मूर्ति कला में मानवाधिकार, महिला सशक्तिकरण, शोषण-विरोध, शिक्षा, और शांति जैसे सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता मिल रही है। उदाहरण के लिए, कई समकालीन मूर्तिकार पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के प्रति जागरूकता को अपनी रचनाओं में व्यक्त कर रहे हैं, जिससे मूर्ति कला न केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति बनी है, बल्कि सामाजिक संदेश का माध्यम भी बन गई है। राजनीतिक और ऐतिहासिक विषय भी मूर्ति कला का हिस्सा बन गए हैं। स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक क्रांतियों और आधुनिक नायकों की मूर्तियां जन-जन तक प्रेरणा पहुंचाने के लिए बन रही हैं। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक विविधता और स्थानीय परंपराओं को भी मूर्तियों में समाहित किया जा रहा है, जिससे विभिन्न समुदायों की पहचान और विरासत को सम्मान मिलता है। इसके साथ ही, आधुनिक मूर्ति कला में अमूर्त और कल्पनात्मक विषय भी देखने को मिलते हैं, जहां कलाकार अपनी भावनाओं, विचारों और सामाजिक दृष्टिकोण को प्रतीकों और आकारों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। यह विषयगत विस्तार मूर्ति कला को केवल दर्शनीय वस्तु से परे एक संवादात्मक और चिंतनशील कला रूप बनाता है। इस प्रकार, विषयगत विविधता ने मूर्ति कला को समकालीन समाज के विभिन्न पहलुओं से जोड़ दिया है और इसे अधिक व्यापक, संवेदनशील और सामाजिक रूप से प्रासंगिक बनाया है। यह परिवर्तन मूर्ति कला की जीवंतता और बहुआयामी स्वरूप को दर्शाता है, जो आने वाले समय में और भी विकसित होता रहेगा।

प्रदर्शन और प्रस्तुति के नए आयाम – मूर्ति कला के प्रदर्शन और प्रस्तुति के क्षेत्र में भी विगत दशकों में व्यापक बदलाव देखने को मिले हैं। पारंपरिक रूप से, मूर्तियां मुख्यतः मंदिरों, धार्मिक स्थलों और सार्वजनिक स्थानों पर स्थापित होती थीं, जहाँ उनका उद्देश्य धार्मिक भक्ति और सांस्कृतिक श्रद्धा को प्रोत्साहित करना था। इन स्थानों पर मूर्तियां स्थिर होती थीं और उनके दर्शन मात्र से ही लोगों को आध्यात्मिक संतोष प्राप्त होता था। लेकिन जैसे-जैसे समय बदला, मूर्ति कला के प्रदर्शन और प्रस्तुति के तरीके भी अधिक विविध और समकालीन बने। आज मूर्तियां केवल धार्मिक या सांस्कृतिक केंद्रों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आधुनिक गैलरियों, कला संग्रहालयों, प्रदर्शनियों और सार्वजनिक कलात्मक स्थलों में भी प्रमुखता से प्रदर्शित की जाती हैं। यह बदलाव मूर्ति कला को एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुंचाने में सहायक रहा है।

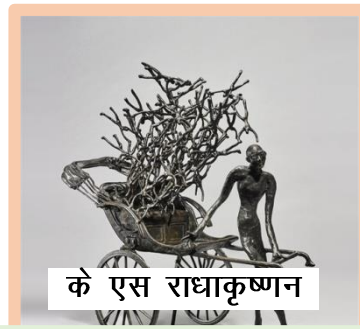


ध्रुव मिस्त्री

कला प्रदर्शनियों और एक्सपो में मूर्तियां अक्सर थ्री-डायमेंशनल इंटरएक्टिव इंस्टालेशन के रूप में प्रस्तुत होती हैं, जहाँ दर्शक मूर्तियों के आसपास घूमकर उन्हें विभिन्न कोणों से देख सकते हैं और कभी-कभी तकनीकी उपकरणों की मदद से उनके साथ संवाद भी कर सकते हैं। डिजिटल युग के आगमन ने मूर्ति कला के प्रस्तुति के नए माध्यम भी प्रदान किए हैं। वर्चुअल रियलिटी (VR) और ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) की मदद से अब कलाकार और दर्शक दोनों मूर्तियों के अनुभव को डिजिटल रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। ऑनलाइन गैलरियां, डिजिटल प्रदर्शनो और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से मूर्ति कला का प्रदर्शन वैश्विक स्तर पर भी संभव हुआ है, जिससे कलाकारों को अधिक पहचान और प्रेरणा मिल रही है। इसके अलावा, सार्वजनिक स्थानों पर बड़े पैमाने पर स्थापित की जाने वाली मूर्तियां शहरों की सांस्कृतिक छवि का हिस्सा बन गई हैं। पार्क, चौक, मेट्रो स्टेशन और विश्वविद्यालय जैसे स्थानों पर आधुनिक मूर्तियां सामाजिक संदेश भी देती हैं और सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देती हैं। इस प्रकार, प्रदर्शन और प्रस्तुति के नए आयामों ने मूर्ति कला को अधिक सजीव, संवादात्मक और व्यापक बना दिया है। इन नवाचारों ने कला को पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकालकर आधुनिक समाज की जरूरतों और अपेक्षाओं के अनुरूप ढाल दिया है, जिससे मूर्ति कला का प्रभाव और महत्व दोनों बढ़े हैं।



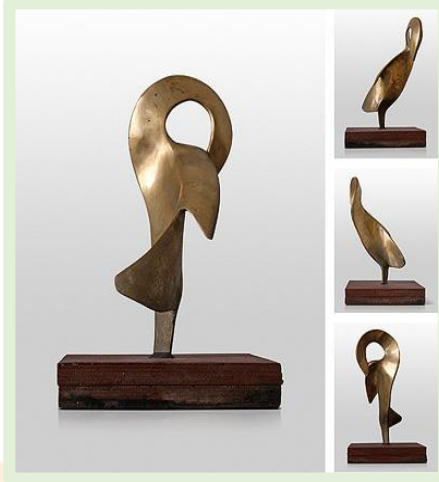
दाविरवाला



के एस राधाकृष्णन



मृणालिनी मुखर्जी



शंखो चौधरी

वैश्वीकरण और संवादात्मक मूर्ति कला – विगत दशकों में वैश्वीकरण के प्रभाव ने मूर्ति कला के स्वरूप और उसके संवादात्मक पहलुओं में भी गहरा बदलाव किया है। वैश्वीकरण ने न केवल विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और कलात्मक शैलियों को एक-दूसरे के करीब लाया है, बल्कि कलाकारों को वैश्विक मंच पर अपने विचार और रचनाएँ प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया है। इस प्रक्रिया में मूर्ति कला ने सीमाओं को पार कर एक सार्वभौमिक भाषा के रूप में अपने आप को स्थापित किया है। वैश्वीकरण के कारण कलाकार अब न केवल अपने स्थानीय या राष्ट्रीय परंपराओं से प्रेरणा लेते हैं, बल्कि वे वैश्विक कला प्रवृत्तियों, तकनीकों और विषयों को भी अपनाते हैं। इससे मूर्ति कला में विविधता आई है और यह अधिक समृद्ध और बहुआयामी बन गई है। उदाहरण के लिए, पश्चिमी और पूर्वी शैलियों का मिश्रण, आधुनिक तकनीकों का उपयोग, और सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों को लेकर वैश्विक स्तर पर संवाद स्थापित करना आज की मूर्ति कला का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। इसके साथ ही, संवादात्मक मूर्ति कला ने भी अपनी भूमिका मजबूत की है। ऐसी मूर्तियाँ दर्शकों के साथ संवाद करती हैं, उनका ध्यान आकर्षित करती हैं और कभी-कभी उनकी प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करती हैं।



राघव कनेरिया

डिजिटल तकनीक, सेंसर, और मल्टीमीडिया के उपयोग से ये मूर्तियाँ न केवल देखने में आकर्षक होती हैं, बल्कि दर्शकों को उनकी रचना में भागीदार बनाती हैं। इससे मूर्ति कला की पारंपरिक एकतरफा अभिव्यक्ति में बदलाव आया है और इसे एक जीवंत, संवादात्मक कला रूप के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। वैश्वीकरण और संवादात्मकता के इन संगमों ने मूर्ति कला को स्थानीय सीमाओं से बाहर निकाल कर एक वैश्विक और आधुनिक स्वरूप दिया है, जहाँ कला और दर्शक के बीच गतिशील संवाद स्थापित होता है। इस प्रकार, मूर्ति कला न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनी है, बल्कि सामाजिक चेतना और वैश्विक मुद्दों को समझाने और जोड़ने का एक प्रभावशाली मंच भी बन गई है।

समकालीन कलाकार और उनकी भूमिका – विगत दशकों में मूर्ति कला के विकास और उसके बदलते आयामों में समकालीन कलाकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ये कलाकार न केवल पारंपरिक तकनीकों और विषयों का

पालन करते हैं, बल्कि वे नई तकनीकों, सामग्रियों और विचारों को अपनाकर मूर्ति कला को समृद्ध और गतिशील बना रहे हैं। युगों से भारतीय मूर्तिकला की प्रतिभा विज्ञान प्रतीकात्मकता तथा धार्मिक आदर्शों से दूर ही रही। फिर जब चालीस के दशक में हमारी मूर्तिकला इस दासता से मुक्त हुई तब फिर इसने चित्रकला की ही भांति प्रेरणा हेतु पश्चिम का रुख किया तथा परिणामस्वरूप प्रयोग एवं उदार अभ्यास की समान प्रक्रियाओं का सामना करना पड़ा। तभी से समकालीन भारतीय मूर्तिकला की कहानी अकादमिक से सुपरिभाषित होकर गैर विषयवस्तुवाद तक की एक यात्रा की कहानी बन गई है। हमारा एक नई तथा गैर परम्परागत सामग्री से परिचय कराया गया है। अधिक निश्चित रूप से इसलिए जिससे कि इसे प्रयोग में लाया जा सके। इसमें शामिल हैं धातु की चादर वेल्ड की गई कलाकृतियों के तार प्लास्टिक धातुवस्तु और कूड़ा करकट। हमारे मूर्तिकारों को वातावरण के अनुसार यहां वहां सार्थक परिणाम मिल गए होंगे लेकिन इस उपलब्धि की लोक और जनजातीय कला के क्षेत्र में नवीनीकृत अभिरुचि के रूप में प्राप्त परिणामों से तुलना नहीं की जा सकती। अब भी कुल मिलाकर आकार एवं रूप पॉलिश तथा संरचना और अमूर्तीकरण पर पूर्णरूपेण ध्यान दिया जा रहा है।

समकालीन भारतीय मूर्तिकला ने न तो चित्रकला की गति और न ही विविधता को दर्शाया है। समकालीन कलाकारों ने मूर्ति कला को एक नए युग में प्रवेश कराया है, जहाँ यह कला केवल धार्मिक या सजावटी वस्तु नहीं रह गई, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विमर्श का एक प्रभावशाली माध्यम बन गई है। समकालीन मूर्तिकार अपने काम में पारंपरिक और आधुनिकता के बीच एक संतुलन स्थापित करते हैं। वे प्राचीन शिल्प कौशल को सम्मान देते हुए नए प्रयोगों और नवाचारों के लिए खुले हैं। डिजिटल तकनीक, 3D प्रिंटिंग, मिश्रित मीडिया और पुनर्नवीनीकरण सामग्रियों का उपयोग करते हुए वे ऐसी मूर्तियां बनाते हैं जो आज के समय की सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों को प्रतिबिंबित करती हैं। इसके अतिरिक्त, समकालीन कलाकारों ने मूर्ति कला को संवादात्मक और सहभागिता आधारित बनाया है। वे दर्शकों को अपने काम के साथ जुड़ने, सोचने और प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार उनकी कला सिर्फ देखने के लिए नहीं, बल्कि अनुभव करने और समझने के लिए होती है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक पद्धतियों के प्रयोग से सृजनात्मकता को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है कला के विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ और सृजनात्मकताओं का रंगों के संयोजन शब्द और चित्रों के निर्माण में विशेष योगदान रहता है इसके कारण कलात्मक कृति अत्यधिक प्रभावशाली बन सकती है कलात्मक बोधता के कारण कोई भी कला अच्छा संदेश छोड़ पाती है।

प्रमुख समकालीन मूर्तिकार जैसे रामकिंकर बैज, शंखो चौधरी, डी पी राय चौधरी, राघव कनेरिया, दाविरवाला, महेन्द्र पांडेय, सुनिर्मल चौटर्जी, अनीश कपूर, मृणालिनी मुखर्जी, और रामकृष्ण बेनीपुरी जैसे कई मूर्तिकारों ने न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय मूर्ति कला की पहचान बढ़ाई है। इनके कार्यों में सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, पर्यावरण संरक्षण जैसे विषय प्रमुख रूप से देखे जाते हैं। ये कलाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समकालीन समाज की जटिलताओं को उजागर करते हैं और बदलाव के लिए प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार, समकालीन कलाकार मूर्ति कला के बदलते आयामों के मुख्य स्तंभ हैं। उनकी रचनात्मकता, नवीनता और सामाजिक प्रतिबद्धता ने मूर्ति कला को एक जीवंत, प्रासंगिक और प्रभावशाली कला रूप बना दिया है, जो भविष्य में भी निरंतर विकसित होती रहेगी। भविष्य की दिशा और संभावनाएँ – मूर्तिकला, जो सदियों से भारतीय संस्कृति और धर्म का अभिन्न हिस्सा रही है, विगत दशकों में अपने स्वरूप, सामग्री, तकनीक और विषयों के संदर्भ में अत्यंत गतिशील और परिवर्तनशील रही है। भविष्य की दिशा में भी यह कला नए आयामों को छूने और विकसित होने की अपार संभावनाएँ रखती है। सामग्री के क्षेत्र में भी सतत नवाचार जारी रहेगा। पारंपरिक पत्थर, कांस्य आदि के साथ-साथ पर्यावरण-अनुकूल, पुनर्नवीनीकरण, और जैविक सामग्रियों का प्रयोग बढ़ेगा, जो टिकाऊता और पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होगा। यह बदलाव मूर्ति कला को भविष्य में अधिक जिम्मेदार और समकालीन बनाएगा। विषयगत रूप से भी मूर्ति कला अधिक व्यापक और समावेशी होगी। सामाजिक, राजनीतिक, पर्यावरणीय और वैश्विक मुद्दे मूर्तियों के माध्यम से प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त होंगे।

साथ ही, वैश्वीकरण के प्रभाव से विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का मेल होगा, जिससे मूर्ति कला का दायरा और समृद्ध होगा। भविष्य में मूर्ति कला न केवल एक कला रूप के रूप में, बल्कि सामाजिक संवाद और सांस्कृतिक विमर्श के एक माध्यम के रूप में भी अपनी भूमिका और अधिक प्रभावी बनाएगी। कलाकारों और दर्शकों के बीच बढ़ती सहभागिता इसे और जीवंत, संवादात्मक और प्रासंगिक बनाएगी। संक्षेप में, मूर्तिकला का भविष्य नवाचार, तकनीकी

उन्नति, सामाजिक जागरूकता और सांस्कृतिक विविधता के संगम से प्रेरित होगा। ये संभावनाएँ मूर्ति कला को नयी ऊँचाइयों तक ले जाएंगी और इसे समय की बदलती मांगों के अनुरूप विकसित करती रहेंगी।

निष्कर्ष : विगत दशकों में मूर्ति कला ने परंपरागत रूपों से निकलकर आधुनिक तकनीकों, नए सामग्रियों और समकालीन विषयों को अपनाकर अपनी पहचान को नयी दिशा दी है। यह कला अब केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं रह गई, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारों को व्यक्त करने का माध्यम बन गई है। तकनीकी उन्नति और वैश्वीकरण के प्रभाव से मूर्ति कला अधिक संवादात्मक, विविध और प्रभावशाली हुई है। इस प्रकार, मूर्ति कला ने अपने बदलते आयामों के माध्यम से समय की जरूरतों के अनुसार स्वयं को निरंतर पुनः परिभाषित किया है और भविष्य में भी नए आयामों को छूने की क्षमता रखती है। विश्व अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण ने भारतीय कलाकारों और मूर्तिकारों के लिए कई दरवाजे खोले हैं।

संदर्भ

1. शर्मा, रामेश्वर, भारतीय मूर्ति कला का इतिहास, नई दिल्ली: भारतीय कला संस्थान, 2015
2. सिंह, अजय कुमार, समकालीन मूर्ति कला: तकनीक और विषय, मुंबई: कला विमर्श प्रकाशन, 2014
3. पांडेय, सुनील, मूर्ति कला में नवाचार और सामाजिक संदर्भ, वाराणसी: संस्कृतिवेद प्रकाशन, 2002
4. मिश्रा, प्रिया, "डिजिटल युग में मूर्ति कला के स्वरूप"। भारतीय कला पत्रिका, अंक 12,
5. शर्मा, कविता, परंपरा से आधुनिकता तक: भारतीय मूर्ति कला के बदलाव, जयपुर: रचनात्मक कला प्रकाशन, 2016
6. यादव नरेंद्र सिंह, तकनीक एवं सिद्धांत राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2004

